DATE ___/___/20___

PAGE NO _____

प्रदीप त्रिपाठी

प्रशिक्षण - डायरी

"निष्ठा"

NISHTHA

National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement

पाठ्यक्रम

DATE / /20

क्र.	अवधि	कोर्स का नाम
1.	16 अक्टूबर "जेनेरिक बिषय"	जेनेरिक बिषय 1. पाठ्यक्रम और समावेशी शिक्षा 2. सामाजिक व्यक्तिगत योग्यता का विकास करना एंव सुरक्षित व स्वस्थ स्कूल वातावरण बनाना। 3. स्कूलो में स्वास्थ्य और कल्याण
2.	1 नवम्बर "शैक्षणिक रण-नीतियाँ"	4. शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में जेंडर को एकीकृत करना। 5. टीचिंग लर्निंग और असेसमेंट कोर्स में ईसीटी का एकीकरण 6. ई इंटीग्रेटेड लर्निंग
3.	16 नवम्बर बिषय-विशिष्ठ शिक्षाशास्त्र	7. स्कूल आधारित मूल्यांकन 8. पर्यावरणीय अध्ययन का शैक्षणिक पाठ्यक्रम 9. गणित का शिक्षाशास्त्र
4.	1 दिसम्बर बिषय-विशिष्ठ शिक्षाशास्त्र	10. सामाजिक विज्ञान का शिक्षाशास्त्र 11. भाषाओ का शिक्षाशास्त्र 12. विज्ञान का शिक्षाशास्त्र (उच्च प्राथमिक चरण)

क्र.	अवधि	कोर्स का नाम
5.	16 दिसम्बर "स्कूल नेतृत्व"	13. स्कूल नेतृत्व : अवधारणा और अनुप्रयोग 14. स्कूली शिक्षा में पहल 15. प्री स्कूल शिक्षा
6.	1 जनवरी से 15 जनवरी तक "स्कूल नेतृत्व"	16. पूर्व व्यवसायिक शिक्षा 17. कोविड-19 परिदृश्य : स्कूली शिक्षा में चुनौतियों का समाधान 18. अधिकार, बाल यौन शोषण (C.S.A.) और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम 2012

=0= प्रत्येक शिक्षक इन 18 प्रशिक्षणों को अपनी डायरी में जरूर लिखे क्योंकि 18 कोर्स करने के बाद इन्ही 18 कोर्सो से प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें 60% आना अनिवार्य है।

=0=

DATE / /20
PAGE NO

कार्यक्रम की विशेषताएं

- कक्षा 1 से 8 तक के सभी शिक्षको व अकादमिक अधिकारियो का अन्मुखीकरण करना।
- अक्टूबर से जनवरी तक प्रशिक्षण की अवधि।
- 18 गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण माड्यूल NCERT द्वारा तैयार।
- 3-4 घंटे का प्रत्येक प्रशिक्षण होगा।

निष्ठा प्रशिक्षण के उद्देश्य

- देश भर के शिक्षको व स्कूल प्रमुखो का सतत व्यावसायिक विकास करना
- गुणवत्ता वाले शिक्षण संसाधनो तक पहुंच प्रदान करना जो बच्चो की विविध जरूरतो को पूरा कराने में शिक्षको की मदद करना।
- निरंतर फॉलोअप, सहयोग, समर्थन देना।

निष्ठा की प्रोसेस

① प्रशिक्षण की लिंक उपलब्ध कराना
② दीक्षा एप में पंजीयत
③ प्रशिक्षण पूर्ण करना (18 माड्यूल)
④ ऑनलाइन कम्पीटेन्सी टेस्ट
⑤ NCERT दिल्ली द्वारा प्रमाण पत्र
⑥ टेस्ट में 60% पाना अनिवार्य
⑦ 60% लाने पर शिक्षको को 1000/- राशि प्रदान करना

कोर्स - 1

DATE / /20
PAGE NO

पाठ्यचर्या और समावेशी कक्षा

• **परिचय :-** माड्यूल में हमारे सीखने की यात्रा

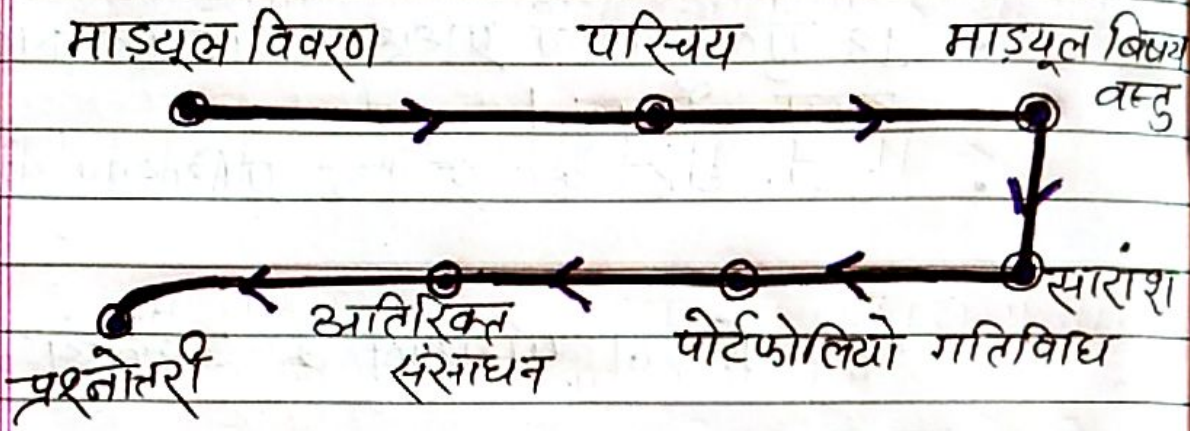

माड्यूल में गतिविधियो के प्रकार :-

① आनलाइन ② ऑफलाइन

▲ ऑफलाइन वह गतिविधि है जिसमें शिक्षक चिंतन करके डायरी या चार्ट निर्माण कर लिखते है।

▲ ऑनलाइन वह गतिविधि है जो शिक्षक ऑनलाईन blogspot link पर जाकर करेंगे। जब शिक्षक इस link पर जायेंगे तो उन्हे इसमें दी गई जानकारी को पढ़ना होगा तथा अपने विचारो को भी Post करना होगा।

• उद्देश्य :- इस माड्यूल से आप निम्न बाते जानेंगे।-

1. शैक्षिक नीतियो, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास तथा अभीष्ठ. निष्पादित एंव मूल्यांकित पाठ्यचर्या के अंत: संबंधो और प्रकार्यों का वर्णन

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के परिदृश्य तथा पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तके में इसके अंतरण की व्याख्या।

3. समावेशी शिक्षा एंव समावेशी कक्षा निर्माण की रणनीति बनाने की एक समृद्ध समझ विकसित करना।

4. नियमित कक्षाओ में विशेष आवश्यक्ता वाले बच्चो को शामिल करने के लिए अपने कौशल को सुदृढ़ करना।

5. Covid - 19 जैसी परिस्थितियो में पाठ्यचर्या व समावेशी शिक्षा से संबंधित चिंताओ व मुद्दो पर अपने विचार देना।

• सामग्री की रूपरेखा →

(1). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, रूपरेखा, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक सहा. सामग्री सीखने का प्रतिफल

(2) समावेशी कक्षा - कानून व नीतिपरक ढॉचा

(3) कक्षाओं में विविधता को स्वीकार करना।
(4) कक्षाओं में विविधता के संबंध में चर्चा
(5) समावेशी कक्षा बनाने के सुझाव
(6) समावेशी शिक्षण अधिगम के मूल्यांकन

पाठ्यचर्चा एंव समावेशी कक्षा →

- पाठ्यक्रम का निर्धारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति से निर्धारित किया जाता है।
- प्रत्येक शाला में प्रत्येक कक्षा में भिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं। जैसे- सीखने के क्रम में, आकार में, आर्थिक स्थिति में, दिव्यांगता में, लिंग, जाति, उम्र के आधार पर।
- निष्ठा का यह माड्यूल हमें समावेशी शिक्षा के बारे में बतायेगा, इन्हे कैसे पढ़ाये / सिखायें, बच्चो में कौन-2 सी विधियो से पढाया जाये, यह सब बताया गया है।
- प्रत्येक बच्चे का अधिकार है पढ़ने का इसलिए सबका दाखिला अपनी शाला में दें ताकि आपसे वह सीख कर अपना शैक्षिक विकास करें।
- प्रत्येक बच्चे के बैकग्राऊण्ड को जाने हो सकता है कि उसके माता पिता रात में लड़े हों, और भूखा सो गया हो और सुबह पढ़ने आया हो, मगर उसका मन न लगता होगा, शिक्षक की यहां भूमिका

बढ़ जाती है

सही क्रम में करें

X A	✓ B
शिक्षक सहायक सामग्री	1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति
पाठ्यचर्चा	2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूपरेखा
सीखने का प्रतिफल	3. पाठ्यचर्चा
पाठ्यपुस्तके	4. पाठ्यक्रम
राष्ट्रीय शिक्षा नीति	5. पाठ्यपुस्तके
राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूपरेखा	6 शिक्षक सहा॰ सामग्री
पाठ्यक्रम	7. सीखने का प्रतिफल

▲ **पाठ्यचर्चा :-** स्कूलो की दिनचर्या, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के मार्गदर्शन से होती हैं जैसे- प्रार्थना, अवकाश, एंव अन्य गतिविधियां। यह राज्य स्तर पर NCERT द्वारा बनाई जाती हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा सामान्य केन्द्रो के इर्द गिर्द घूमती हैं इनमें हमारे संवैधानिक मूल्य जिसमें समता, सामा॰ न्याय, धर्मनिरपेक्षता, और हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण हैं।

" राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के बाद एक और दस्तावेज हैं जिसे हम पाठ्यक्रम कहते हैं। "

पाठ्यक्रम हमारे स्कूलो की शिक्षण अधिगम के लिए Topices व थीम्स देता हैं जो कि कक्षावार, विषयवार होते

हैं। तथा इसमें यह बताया जाता है कि किस कक्षा में किस बिषय में किस तरह के बिषयवस्तु को पढ़ाया जाए, उसका मूल्यांकन कैसे हो, कितना समय दिया जाये,।

पाठ्यक्रम के बाद आती हैं हमारी पाठ्यपुस्तकें। पाठ्यपुस्तकों में बिषय-वस्तु होती हैं यानि जो Topices हमारे पाठ्यपुस्तको में दिये हैं उनको Detail out यानि विवरण दिया जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर मॉड़ल पुस्तके बनती हैं। जो कि Ncert द्वारा बनाई जाती हैं।

मगर राज्य व संघ शासित प्रदेशो में संदर्भ अलग-2 होते हैं।
इन्ही मॉडल पुस्तको के पाठ्यक्रम के आधार पर राज्य स्तर के लिए भी पाठ्य पुस्तको का निर्माण किया जाता है जिसमें बच्चो के लिए संदर्भों का ध्यान रखा जाता है, प्रत्येक प्रदेश के खान-पान, संस्कृति को ध्यान में रखते हुये पाठ्यपुस्तके बनती हैं ताकि उन्हे लोकल, स्थानीय ज्ञान मिल सके।

पाठ्यपुस्तको के बाद शिक्षको के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण किया जाता है।
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति मार्गदर्शन प्रदान करती है।

आज हमारे सामने तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 है। इसके पहले 1968, में सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति और फिर 1986 में दूसरी। इसके बाद NCERT द्वारा पहली राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1975 में बनी। इस तरह से NCERT ने तीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया। ① 1988 की, ② 2000 की एवं ③ 2005 की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति	Ncert द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
1968	1975
1986	1988
2020	2000
	2005
	2020

- राष्ट्रीय परिचर्या की रूपरेखा का निर्माण क्यो?
- ऐसा इसलिए क्योकि - हम बच्चो में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक शैक्षिक परिवर्तन को समझा पायें तथा बच्चो का सर्वांगीण विकास करा पायें। Ncert ने कक्षा 1 से 10 तक लर्निंग outcomes का निर्माण किया है।

• गुप्त पाठ्यचर्या (हिडन करिकुलम) क्या है?

⇒ हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति या पाठ्यचर्या की रूपरेखा सबने जेंडर (लिंग) संवेदनशीलता के बारे में बताया जाता है। किंतु अगर शिक्षक लड़के व लड़कियों को अलग-2 बैठाते हैं तो ये एक गुप्त संदेश देता है कि बच्चों में क्या अंतर हैं- हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, पाठ्यपुस्तके भी जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देती है मगर शिक्षक जब उस तरह का बेहेवीयर कक्षा में करता है तो कही न कही इससे बच्चो में मैसेज जाता है और वो बच्चे उस संदेश को अपने व्यवहार में ले आते हैं इसे ही गुप्त पाठ्यचर्या कहते हैं।

• हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति और पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य यह है कि सबको साथ लेकर चलें, सबको एक समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाये चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, समुदाय, आर्थिक स्थिति, लिंग, भेद से क्यो न हो।

▲ नीतियाँ बदलती रहती हैं जैसे कि हम N.E.P. National educ policy (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) 1986 से N.E.P. 2020 की ओर बढ़ते हैं। जैसे कि N.E.P. 1986 में स्कूल की संरचना 10+2 थी जबकि अब NEP 2020 में प्रस्तावित संरचना 5+3+3+4 है।

Covid-19 के दौरान अपने विचारो का साझा ⇒

Covid 19 के दौरान, आप अपने छात्रो के साथ कैसे संपर्क में रहें? आपने अपने शिक्षण में क्या बदलाव किये? अपने अनुभव साझा करें।

इसके लिए किसी भी ब्राउजर से URL टाइप करे http://bit.ly/mpn-1-4 या Screen में दिये गये QR कोड को दूसरे फोन से स्कैन करें।

इसके बाद Enter your Comment में क्लिक करें और अपने विचार/प्रयास सांझा करें। Publish को Touch करते ही Email id और Password डालें साथ ही Blogger Profile में अपना Name डाले और Continue to Blogger button पर click करें।

Publish पर click करते ही आपकी प्रतिक्रिया को Post कर दी जावेगी।

समावेशी कक्षा ⇒

हमारी कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जो पढने में रूचि नही लेते, स्कूल तो आते है मगर उनकी सहभागिता नही रहती, कुछ ऐसे भी बच्चे होते हैं जो स्कूल ही नही आते, ऐसे बच्चो पर शिक्षक ध्यान दे तथा उनमें रुचि पैदा करायें।

कुछ बच्चे दिव्यांग होते हैं तो क्या उन्हे दिव्यांग वाली शाला में दाखिला दिलवाना उचित होगा। क्या इन दिव्यांग बच्चो को Normal बच्चो के साथ पढने देना उचित है?

हो सकता है कि वह दिव्यांग बच्चा, दिव्यांग वाली शाला में पढने भी लगे, ब्रेनलिपि या अन्य संसाधनो से पढने व सीखने भी लगे मगर जब वह बड़ा होकर कक्षा से बाहर की दुनिया में जायेगा तो उसे Normal बच्चो के साथ अच्छा न लगे, हीन भावना भी आ सकती है कि जो काम सभी कर सकते हैं वो मैं नही कर सकता।

अगर हम इन दिव्यांग बच्चो को अपनी शाला में दाखिला दें और इनके स्वास्थ्य, शिक्षा, और उनकी सुरक्षा पर ध्यान देते हुये उन्हे सब के बीच रहकर शिक्षा दें तो वे दिव्यांग बच्चे सब के साथ घुल मिल जायेंगे, Normal बच्चे की तरह न सही पर अपनी प्रतिक्रिया ईशारो से तो व्यक्त कर पायेंगे।

RTE एक्ट के तहत हम किसी भी बच्चे को अपनी शाला में पढने से रोक नही सकते क्योकि शिक्षा का अधिकार ये कहता है कि सभी प्रकार के बच्चो का हक है पढने का चाहे वे दिव्यांग हो, उम्र में ज्यादा हो, किसी धर्म, जाति

या कमजोर आर्थिक स्थिति का ही क्यों न हो, सबका अधिकार है शिक्षा पाना। किसी भी बच्चे में भिन्नता और गलतियों को न देखा जाये। हर बच्चे में कुछ-न कुछ खूबियां होती हैं, कुछ मजबूत क्षेत्र / कौशल होते हैं जिन्हे आप जानकर और Develop करें उनकी कमजोरि-यों को जानकर उन्हे दूर करने का प्रयास करें तथा उन बच्चो को सामाजिक प्राणी बनायें यही शिक्षक की भूमिका है। ऐसी ही कक्षा को समावेशी कक्षा कहते हैं जिसमें सभी प्रकार के बच्चे समान भाव से रुचि के साथ शिक्षा लेते हैं।

▲ समावेशी शिक्षा – कानूनी एंव नीतिगत ढांचा

① 6-14 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चो को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार है।

[भारतीय संविधान के अनु० 21-अ के अन्तर्गत, 86 संविधान संशोधन अधि० 2002]

②. 6-14 वर्ष के सभी बच्चो को प्राथमिक शिक्षा के पूर्ण होने तक पडोस के विद्यालय में निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है।

[R.T.E. एक्ट 2009, जो 1 अप्रैल 2010 में लागू]

③. गंभीर अक्षमताओं वाले बच्चो को घर में शिक्षा पाने का पूर्ण अधिकार है।
[RTE अधि० संशोधन 2012]

④. समावेशी शिक्षा का तात्पर्य सामान्य व विशेष जरूरत वाले बच्चो को एक साथ सिखाने से है तथा शिक्षण अधिगम व्यवस्था को विशेष जरूरत वाले बच्चो के अनुरूप देना है। [दिव्यांगजन अधिकार कानून 2016]

⑤. N.C.F. 2005 पाठ्यचर्या को "बच्चो के लिए समावेशी व सार्थक अनुभव बनाने के महत्त्व को बताते हुये कहता है कि- हमें छात्रो व उनके सीखने की प्रक्रिया के बारे में एक मौलिक बदलाव लाने की जरूरत है।

▲ **प्रेरक कहानी :-** यह कहानी कहीं न कहीं हमारे पढ़ाने के तौर तरीको, और हमारी मानसिकता को बताने वाली कहानी है। इस कहानी में बच्चे व शिक्षक न होकर बल्कि ये जानवरो की पाठशाला की कहानी है जिसमें सभी जानवरो ने इंसानी पाठशाला की ही तरह अपनी स्कूल चलाने को सोचा। जिसमें सबसे पहले बतख ने दाखिला लिया जो तैराकी में कुशल व तेज थी, फिर गिलहरी जो एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक फुदकने में माहिर थी फिर खरगोश ने दाखिला

लिया जो सबसे तेज दौड़ता था। इसी क्रम में कई जानवर दाखिला करा चुके थे। जानवरों की पाठशाला में करीकुलम /पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया कि हम सभी बच्चो को तैरना, दौड़ना और फुदकना सिखायेंगे। और मूल्यांकन भी करेंगे।

बतख को जब कहा गया कि तुम भागो, चलो, दौड़ो और उड़ो तो वह उतना अच्छा नही कर पाई, वह खुरदुरे पत्थर बजरी में चलने लगी मगर उसके पैर फट चुके थे। 3 माह के बाद जब रिपोर्ट कार्ड आया तो वह D ग्रेड में आई सभी विषयों में जबकि वह एक विषय यानि (तैराकी) में A ग्रेड की थी। बतख काफी दुःखी थी, साथ ही उसके पालक भी दुःखी थे। इसीतरह खरगोश को पानी में तैरने, पेड़ो में फुदकने के लिए कहा गया और गिलहरी का भी इसी तरह अभ्यास और मूल्यांकन किया गया। मगर सभी जानवर D ग्रेड में आये जबकि वे किसी न किसी विषय में पारंगत थे।

इसी प्रकार हम भी बच्चो की खूबियो को बिना जाने, उनकी खूबियो को बढावा न देते हुये जबरजस्ती उनसे वो काम करने को कहते हैं जो उनसे आता ही नही। अर्थात् हम उनके लक्ष्य को बिना जाने, बिना बताये ही शिक्षा देते हैं

अगर हम उनकी खूबियों को और मजबूत करें और उनका प्रोत्साहन करें तो अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। शिक्षक को कभी भी बच्चो को हतोत्साहित नही करना चाहिए।

- इस एनिमल पाठशाला को अपनी कक्षा में विविधता से जोड़ते हुए अपने विचार को सांझा करें। ⇒

इसके लिए ब्राउजर में http://bit.ly/mpn-1-5 Type करें फिर site में अपने विचार Type करें फिर Publish पर click करें।

▲ स्वयं को एक शिक्षार्थी के रूप में देखना ⇒

हम अपनी कक्षा में कुछ बच्चो को रुचि न लेते तथा सीख पाने में असफल पाने पर बच्चे को दोषी बता देते हैं, अगर हम उन बच्चो से ये पता करें कि आपको पढ़ाई में कब मजा आता है? आप कब जल्दी सीख पाते हैं? आपको क्या समूह में काम करना पसंद है? क्या आपको पुस्तको के चित्र पसंद हैं? आपको कब पढ़ने / सीखने में मन नही लगता?

तो आपको जवाब में कुछ ऐसे जवाब मिलेंगे।

① सर, जब शोर होता है, तब हमें पढ़ने में मजा नही आता।

② जब भूख लगती है तब पढ़ने में अच्छा नही लगता।

③ जब रुचि के साथ, गतिविधि कराते हुये आप पढ़ाते हैं, तो हम जल्दी सीखते हैं

④ हमें चित्रो वाली किताबो की कहानी अच्छी लगती है

⑤ हमें पाठ से संबंधित वीडियो देखकर जल्दी समझ आता है

⑥ हमें ग्रुप में काम करना अच्छा लगता है मगर Covid-19 के चलते डर-2 बैठना पड़ता है

⑦ जब आप बिना पढ़ाये हुये पाठ को पढ़ने के लिए बोल देते हैं

इन सभी जवाबो को जानकर प्रत्येक शिक्षको को अपने पढ़ने/पढ़ाने के तौर-तरीको को बदलना होगा। साथ ही अपने बच्चो को अच्छे से जानें कि वे किस तरह में सीखते हैं।

▲ कक्षा में विविधता को संबोधित करना ⇒

समावेशी कक्षाओ के निर्माण हेतु कुछ बाते जरूरी हैं –

(1) <u>शिक्षक की भूमिका</u> ⇒ (1) सकारात्मक सोच व विश्वास

(2) संवेदनशील बने।

(3) बच्चो के बीच अंतर को जाने।

(4) बच्चो की सराहना करें।

(5) छात्रो की सामाजिक - सांस्कृतिक, भौतिक विविधताओं को स्वीकार करें।

(6). बच्चो की तुलना करना बंद करें तथा सबकी सहभागिता कराना सुनिश्चित करें।

(7) दिव्यांग बच्चो के लिए सहायक यंत्र जैसे- व्हील चेयर, बैशाखी, छड़ी, के उपयोग को प्रोत्साहित व सहूलियत प्रदान करें।

(8) रूढ़िवादी विचारधारा का त्याग करें।

(9) यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (U.D.L.) लागू करना। UDL शिक्षण और अधिगम एक ऐसा तरीका है जो कक्षा में प्रत्येक सीखने वाले की जरूरत को पूरा करता है।

(10) UDL यह स्वीकार करता है कि यदि छात्र जानकारी तक नही पहुच पाता तो वह इसे नहीं सीख सकते हैं अतः सीखने की सामग्री को कई रूपो में उपलब्ध होना चाहिए जैसे- प्रिंट, ऑडियो, वीडियो, ब्रेल, सांकेतिक भाषा आदि।

Accessiblity in school Curriculum:-

1. बरखा सिरीज 2. ऑड़ियो पुस्तकें
3. शिक्षकों के लिए हैण्ड्बुक
4. स्पर्शनीय मैंप बुक
5. सांकेतिक भाषा वीड़ियो कार्यक्रम
6. ऊचे स्वर वाली पुस्तके पढे।
7. मोबाइल एप्प टेक्स्ट टू स्पीच।

समावेशी कक्षा निर्माण हेतू सुझाव

1. समावेशी कक्षाओं को सफलतापूर्वक बनाया जा सकता है जब शिक्षकों के पास पर्याप्त कौशल हो तथा सभी प्रकार के बच्चो की सीखने की जरूरतों को पूरा करने हेतू उपयुक्त रणनीति अपनाई जाये।
2. NCERT द्वारा शिक्षको की मदद के लिए 2 हैण्ड्बुक प्रकाशित की गई है।
   - (A) विशेष जरूरत वाले बच्चो का समावेशन प्राथ. स्तर पर।
   - (B). विशेष जरूरत वाले बच्चो का समावेशन उच्च प्राथमिक स्तर।

दृष्टिबाधित (V.I.) बच्चे का समावेश:-

① कक्षा में शिक्षक के करीब एक सीट आरक्षित करें।

②. उसे नाम से संबोधित करें।

③ छात्रो को बड़े प्रिंट, ब्रेल लिपि, स्पर्श आलेख, आरेख, ऑडियो बुक, प्रदान करें।

श्रवण बाधित (H.I.) बच्चे का समावेश :-

① श्रवण विशेषज्ञो की Help लें।
② चित्र दिखाते हुये धीरे-2 बोलें ताकि वह आपके हाव भाव को समझें।
③ छोटे वाक्य बोलें।
④ Vedio से बच्चो को सिखायें।
⑤ बरखा सिरीज का use करें।

शारीरिक रूप से दिव्यांग का समावेशन :-

① कक्षा में बैठने के लिए सुलभ टेबल बेंच प्रदान करायें।
② बहुविकल्पीय प्रश्नो जैसे हां/नही या चार उत्तर वाले प्रश्नो से आंकलन करें।
③ खेलकूद में बच्चे को निर्णायक बना सकते हैं।

समावेशी बच्चो का मूल्यांकन :-

1. एक प्रश्न के कई प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करें, स्पष्ट संदेश दें और एक प्रश्न के बाद पर्याप्त समय दें।
2. याद करने के बजाय देखकर/पहचानकर चुनने, सही उत्तर पर रंग भरने

गोला करने, मिलान करने, काटने, चिपकाने को कहें।

3. अक्षरो के कट आउट का use करें।

4. चित्रो व टिकटो व पोस्टर का use करें।

5. फ्लैश कार्ड, शब्द कार्ड, का use करें।

▲ NCF 2005 के मार्गदर्शक सिद्धांत ⇒.

① ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ना

② रटने की प्रथा बंद करें।

③ पाठ्यपुस्तको पर केन्द्रित न होकर बच्चो का सर्वांगीण विकास करें।

④ मूल्यांकन सरल व लचीला रहे।

=0= प्रश्नोत्तरी =0=

प्र01 ⇒ N.E.P. 2020 स्कूली शिक्षा के मौजूदा 10+2 डिजाइन किसमें बदलने का प्रस्ताव है?

उत्तर ⇒ 5 + 3 + 3 + 4

प्र02 ⇒ भारत में शिक्षा पर पहली व दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति किन वर्षो में तैयार हुई?

उत्तर ⇒ 1968 और 1986

प्र03⇒. बच्चो को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम कब बना

उत्तर⇒ वर्ष 2009 में अधिनियमित किया गया तथा 2010 में लागू हुआ।

प्र04⇒ इन सभी को छोड़कर U.D.L के सिद्धांत हैं?

① काम करने के साधन

② प्रस्तुति के कई साधन

③ अभिव्यक्ति के कई साधन

④ ✓ व्यवहार प्रबंधन के साधन

प्र05⇒ राम दृष्टिबाधित है। उसके लिए कौन सा अभिविन्यास व गतिशीलता प्रशिक्षण हेतू उपयोगी होगा?

उत्तर⇒ स्कूल भवन के स्पर्श नक्शे

प्र06⇒. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए सही कथन है।

उत्तर⇒ ① यह पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में शामिल की जाने वाली सामग्री पर मार्गदर्शन देता है।

② शैक्षिक उद्देश्य प्रदान करता है।

③ NCERT को NCF विकसित करने हेतु आदेश दिया गया है।

✓ ④ उपरोक्त सभी

प्र07⇒ विकलांग व्यक्ति अधि०, 2016, समावेशी शिक्षा को शिक्षा की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित करता है।

उत्तर⇒ एक साथ सीखें और सीखने की प्रणाली उपयुक्त रूप से अनुकूलित है।

प्र08⇒ कौन सा कथन पाठ्यक्रम के लिए मान्य नहीं है।

उत्तर⇒ ①. यह भारत में विभिन्न स्तरों पर शिक्षा के लिए दृष्टि प्रदान करता है।

प्र09⇒ समान विकलांग वाले 2 बच्चे :-

उत्तर - कक्षा में शिक्षक के द्वारा विभिन्न हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है

प्र010⇒ समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए क्या सही नहीं है।

उत्तर⇒ शिक्षक की सामाजिक - आर्थिक स्थिति

:- धन्यवाद :-